प्रभुसत्ता की अवधारणा

राजनीति विज्ञान में मूलभूत सिद्धांत

प्रभुसत्ता राज्य की सर्वोच्च और अंतिम शक्ति है जो समाज में व्यवस्था और शासन को संभव बनाती है। यह राजनीतिक सिद्धांत का केंद्रीय तत्व है।

Made with GAMMA

प्रभुसत्ता का अर्थ और परिभाषा

सर्वोच्च शक्ति की व्याख्या

प्रभुसत्ता का अर्थ

प्रभुसत्ता राज्य की वह सर्वोच्च शक्ति है जो अंतिम निर्णय लेने का अधिकार रखती है। यह आंतरिक और बाह्य दोनों क्षेत्रों में राज्य की स्वतंत्रता को दर्शाती है।

- सर्वोच्च और अविभाज्य शक्ति
- कानून निर्माण की अंतिम सत्ता
- बाहरी हस्तक्षेप से स्वतंत्रता

मूल विशेषताएं

प्रभुसत्ता राज्य को अन्य संस्थाओं से अलग करती है और इसे राजनीतिक व्यवस्था का आधार बनाती है।

- राज्य के भीतर सर्वोच्च सत्ता
- किसी भी बाहरी शक्ति के अधीन नहीं
- स्थायी और निरंतर शक्ति

Made with GAMMA

महान विचारकों की परिभाषाएं

जीन बोदिन (1530-1596)

"प्रभुसत्ता राज्य की वह सर्वोच्च शक्ति है जो नागरिकों और प्रजा पर कानून के अधीन नहीं है।"

प्रभुसत्ता की आधुनिक अवधारणा के जनक

थॉमस हॉब्स (1588-1679)

"प्रभुसत्ता वह सर्वोच्च शक्ति है जिसे सामाजिक समझौते द्वारा स्थापित किया जाता है और जो पूर्ण और अविभाज्य है।"

निरंकुश प्रभुसत्ता के समर्थक

जे.जे. रूसो (1712-1778)

"प्रभुसत्ता सामान्य इच्छा की अभिव्यक्ति है और यह जनता में निहित होती है। यह अविभाज्य और अहस्तांतरणीय है।"

जनप्रभुसत्ता के प्रतिपादक

Made with GAMMA

डाइसी और लास्की के सिद्धांत

ए.व्ही. डाइसी (1835–1922)

> "संसद की प्रभुसत्ता ब्रिटिश संविधान की प्रमुख विशेषता है। संसद किसी भी कानून को बना, संशोधित या समाप्त कर सकती है।"

मुख्य बिंदु:

- संसदीय सर्वोच्चता का समर्थन
- कानूनी प्रभुसत्ता का सिद्धांत
- कोई उच्चतर कानून नहीं

हैरोल्ड लास्की (1893–1950)

> "प्रभुसत्ता एक बहुलवादी अवधारणा है। राज्य के साथ-साथ अन्य संगठनों का भी अपना स्थान है और प्रभुसत्ता विभाज्य है।"

मुख्य बिंदु:

- बहुलवादी दृष्टिकोण
- राज्य की सीमित शक्ति
- नागरिक समाज की भूमिका

Made with GAMMA

प्रभुसत्ता के प्रकार

कानूनी और राजनीतिक विभाजन

कानूनी प्रभुसत्ता

वह शक्ति जो कानूनी रूप से मान्य है और जिसे कानून द्वारा स्वीकृति प्राप्त है। यह औपचारिक और संस्थागत होती है।

विशेषताएं:

- संविधान द्वारा स्थापित
- कानून निर्माण की शक्ति
- न्यायिक मान्यता प्राप्त
- संसद या विधायिका में निहित

राजनीतिक प्रभुसत्ता

वह शक्ति जो वास्तविक रूप से जनता या मतदाताओं में निहित होती है। यह अनौपचारिक लेकिन शक्तिशाली होती है।

विशेषताएं:

- जनता की इच्छा में निहित
- चुनाव के माध्यम से व्यक्त
- वास्तविक शक्ति का स्रोत
- लोकतांत्रिक व्यवस्था का आधार

Made with GAMMA

आंतरिक और बाह्य प्रभुसत्ता

आंतरिक प्रभुसत्ता

राज्य की अपने क्षेत्र और नागरिकों पर सर्वोच्च शक्ति

- कानून निर्माण और प्रवर्तन
- आंतरिक व्यवस्था बनाए रखना
- नागरिकों पर अधिकार
- प्रशासनिक नियंत्रण

बाह्य प्रभुसत्ता

अंतर्राष्ट्रीय क्षेत्र में राज्य की स्वतंत्रता और समानता

- विदेश नीति निर्धारण
- अंतर्राष्ट्रीय संधियां करना
- युद्ध और शांति का अधिकार
- राजनयिक स्वतंत्रता

ये दोनों पक्ष एक-दूसरे के पूरक हैं और आधुनिक राज्य की पूर्ण प्रभुसत्ता के लिए आवश्यक हैं।

Made with GAMMA

प्रभुसत्ता की प्रमुख विशेषताएं

स्थायित्व

प्रभुसत्ता राज्य का स्थायी गुण है। यह शासकों के बदलने से प्रभावित नहीं होती। राज्य के अस्तित्व तक यह बनी रहती है।

अविभाज्यता

प्रभुसत्ता को विभाजित नहीं किया जा सकता। यदि विभाजित की जाए तो वह नष्ट हो जाती है। एक राज्य में केवल एक ही प्रभुसत्ता हो सकती है।

निरपेक्षता

प्रभुसत्ता पूर्ण और असीमित शक्ति है। यह किसी बाहरी सत्ता के अधीन नहीं है और इस पर कोई कानूनी प्रतिबंध नहीं है।

सार्वभौमिकता

प्रभुसत्ता राज्य के सभी व्यक्तियों, संस्थाओं और क्षेत्रों पर समान रूप से लागू होती है। इसमें कोई अपवाद नहीं है।

अहस्तांतरणीयता

प्रभुसत्ता को किसी अन्य शक्ति को हस्तांतरित नहीं किया जा सकता। यदि हस्तांतरित की जाए तो राज्य का अस्तित्व समाप्त हो जाता है।

सर्वोच्चता

प्रभुसत्ता राज्य की सर्वोच्च शक्ति है। इससे ऊपर कोई अन्य शक्ति या सत्ता नहीं होती। यह अंतिम निर्णय लेने का अधिकार रखती है।

Made with GAMMA

ऑस्टिन का प्रभुसत्ता सिद्धांत

आदेश, आज्ञाकारिता और दंड का त्रिकोण

01

प्रभुसत्ता की परिभाषा

जॉन ऑस्टिन के अनुसार, प्रभुसत्ता एक निश्चित व्यक्ति या व्यक्तियों के समूह की वह शक्ति है जिसकी आज्ञा का पालन समाज का अधिकांश भाग करता है।

02

आदेश का सिद्धांत

कानून प्रभुसत्ताधारी का आदेश है। प्रभु जो आदेश देता है, वही कानून बन जाता है। कानून इच्छा की अभिव्यक्ति है, तर्क की नहीं।

03

आज्ञाकारिता की आदत

समाज के अधिकांश लोग प्रभु के आदेशों का नियमित रूप से पालन करते हैं। यह आदत प्रभुसत्ता को वैधता प्रदान करती है।

04

दंड की व्यवस्था

आदेश के उल्लंघन पर दंड का प्रावधान होना आवश्यक है। दंड का भय ही कानून को प्रभावी बनाता है और आज्ञाकारिता सुनिश्चित करता है।

05

निरंकुश और अविभाज्य प्रभुसत्ता

ऑस्टिन के अनुसार प्रभुसत्ता निरंकुश, अविभाज्य और असीमित होती है। यह किसी कानूनी सीमा से बंधी नहीं है।

Made with GAMMA

ऑस्टिन के सिद्धांत की आलोचनाएं

ऐतिहासिक दृष्टि से दोषपूर्ण

मेन और सेवनी की आलोचना: प्रभुसत्ता आदेश से नहीं बल्कि रीति-रिवाजों से विकसित हुई है। प्राचीन समाजों में निश्चित प्रभु नहीं था।

कानूनी और राजनीतिक का भ्रम

ऑस्टिन ने कानूनी और राजनीतिक प्रभुसत्ता में अंतर नहीं किया। वास्तव में दोनों अलग हैं और राजनीतिक प्रभुसत्ता अधिक महत्वपूर्ण है।

लोकतांत्रिक सिद्धांतों के विरुद्ध

लास्की और बार्कर की आलोचना: निरंकुश प्रभुसत्ता की अवधारणा लोकतंत्र, जनमत और नागरिक अधिकारों के सिद्धांतों का खंडन करती है।

अंतर्राष्ट्रीय कानून की उपेक्षा

ऑस्टिन ने अंतर्राष्ट्रीय कानून को वास्तविक कानून नहीं माना। यह दृष्टिकोण आधुनिक अंतर्राष्ट्रीय संबंधों में अव्यावहारिक है।

संघीय व्यवस्था में असफल

संघीय राज्यों में प्रभुसत्ता विभाजित होती है। ऑस्टिन का सिद्धांत इसे स्पष्ट नहीं कर पाता। अविभाज्यता का सिद्धांत अव्यावहारिक है।

नैतिक आधार की कमी

हीगल और ग्रीन की आलोचना: केवल शक्ति और दंड पर आधारित सिद्धांत नैतिकता और न्याय के तत्वों की उपेक्षा करता है।

Made with GAMMA

आधुनिक युग में प्रभुसत्ता

समकालीन चुनौतियां

- **वैश्वीकरण:** राष्ट्रीय सीमाओं का धुंधलापन और अंतर्राष्ट्रीय निर्भरता
- **अंतर्राष्ट्रीय संगठन:** संयुक्त राष्ट्र, विश्व व्यापार संगठन की भूमिका
- **मानवाधिकार:** सार्वभौमिक मानवाधिकारों की अवधारणा
- **बहुराष्ट्रीय निगम:** आर्थिक शक्ति का संकेंद्रण
- **साइबर युग:** डिजिटल सीमाओं की समस्या

निष्कर्ष

प्रभुसत्ता आज भी राज्य का मूलभूत तत्व है, लेकिन इसका स्वरूप बदल रहा है। निरपेक्ष प्रभुसत्ता की जगह सापेक्ष प्रभुसत्ता की अवधारणा प्रासंगिक हो गई है।

193

संयुक्त राष्ट्र सदस्य

प्रभुसत्ता संपन्न राष्ट्र

27

यूरोपीय संघ देश

साझा प्रभुसत्ता का उदाहरण

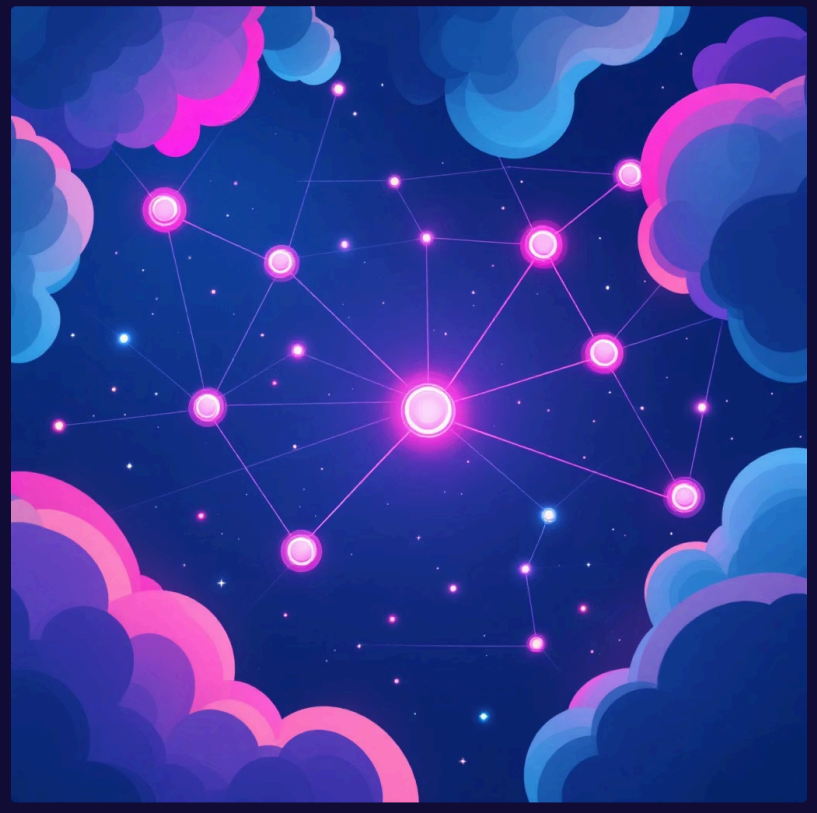

महत्वपूर्ण संदेश: प्रभुसत्ता की अवधारणा राजनीति विज्ञान में आज भी प्रासंगिक है, लेकिन इसे समकालीन संदर्भ में समझना आवश्यक है। आधुनिक राज्य को अंतर्राष्ट्रीय सहयोग और वैश्विक शासन के बीच संतुलन बनाना होगा।

Made with GAMMA